Dainik Bhaskar (Indore), 30th October 2025, Page – 04

BREAKING कैंसर की दवा, ब्रिक, ग्राउंड वॉटर मैनेजमेंट सहित कई काम किए

IIT की 6 टेक्नोलॉजी इंडस्ट्रीज को ट्रांसफर, आमजन भी खरीद सकेंगे

गजेंद्र विश्वकर्मा • इंदौर

आईआईटी इंदौर में होने वाली रिसर्च का फायदा अब देश के आम नागरिकों को मिलने जा रहा है। संस्थान ने 6 नई टेक्नोलॉजी डेवलप की हैं जिन्हें देश की अलग-अलग इंडस्ट्रीज को ट्रांसफर कर दिया गया है। यह इनोवेशन एग्रीकल्चर, एनर्जी, हेल्थ और डेवलपमेंट से जुड़े हुए हैं। सबसे चर्चा में ग्राउंड वॉटर मैनेजमेंट एप है। इससे अब किसान मोबाइल के जरिए यह जान पाएंगे कि खेत के नीचे कितना पानी बचा है और सिंचाई कब करनी है। यह एप भूमिगत जल के बेहतर प्रबंधन में मदद करेगा और जल संरक्षण की दिशा में अहम कदम साबित होगा।

निर्माण क्षेत्र के लिए आईआईटी की दूसरी रिसर्च फ्लाई ऐश से बनी कलर्ड बाय-लेयर्ड ब्रिक को भी इंडस्ट्रीज को ट्रांसफर कर दिया गया है। इसमें मजबूत, टिकाऊ और रंगीन ईंटें तैयार की गई हैं जो अब घर बनाने में पेंट और प्लास्टर दोनों की जरूरत कम करेंगी। आईआईटी में तैयार हुआ इलेक्ट्रिक वाहनों की बैटरियों के लिए शेप स्टेबल और फ्लेम रेटार्डिंग फेज चेंज कॉम्पोजिट भी इंडस्ट्रीज में चर्चा में था। यह नई टेक्नोलॉजी बैटरी को ज्यादा सुरक्षित बनाते हुए एनर्जी की बचत करेगी। एनर्जी सेक्टर में संस्थान का अगला कदम है लो टेम्परेचर हाइड्रोजन प्रोडक्शन कैटेलिस्ट, जो मेथनॉल से कम तापमान पर हाइड्रोजन तैयार कर सकता है। इस टेक्नोलॉजी से देश के ग्रीन हाइड्रोजन मिशन को नई गति मिलेगी।

इंडस्ट्रीज इन्हें बड़ी संख्या में तैयार कर बाजार में लाएगी

• इस 3डी मशीन से अब सेंसर, फ्लेक्सिबल वियरेबल्स और बायोमेडिकल डिवाइस तैयार होंगे।

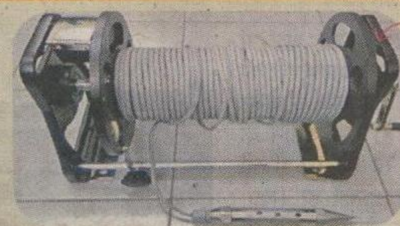

• यह मशीन लगातार बताती रहेगी कि जमीन के अंदर कितना पानी है।

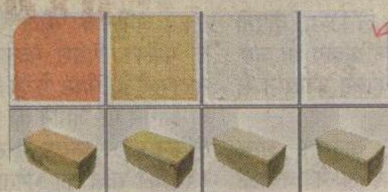

• फ्लाईएश की रंगीन ईंटों से प्लास्टर व पेंट्स की जरूरत नहीं होगी।

हेल्थ सेक्टर को इससे गति मिलेगी

आईआईटी ने माइक्रो इंजीनियरिंग में भी नई क्रांति की है। लेजर डीकल ट्रांसफर आधारित माइक्रो 3डी प्रिंटर अब सेंसर, फ्लेक्सिबल वियरेबल्स और बायोमेडिकल डिवाइस बनाने में काम आएगा। यह टेक्नोलॉजी सटीक और कम मटेरियल इस्तेमाल करने वाली है। एक और सबसे प्रभावशाली रिसर्च है ल्यूकीमिया (रक्त कैंसर) के इलाज के लिए बनाई गई दवा। यह 85 प्रतिशत से ज्यादा कैंसर कोशिकाओं को खत्म करने में सफल रही है। यह दवा असरदार होने के साथ ही किफायती भी है। इससे भारत के हेल्थ सेक्टर को काफी फायदा मिलेगा। संस्थान के पीआरओ सुनिल कुमार ने बताया कि ये सभी टेक्नोलॉजी रिसर्च फॉर इंडिया की सोच को साकार करती हैं।

इसलिए खास है यह पहल

देश में हर वर्ष 1200 से ज्यादा पेटेंट फाइल होते हैं, लेकिन उनमें से मुश्किल से 10% ही इंडस्ट्री तक पहुंच पाते हैं। आईआईटी इंदौर ने इस गैप को खत्म करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। संस्थान ने पिछले दो वर्ष में 40 से ज्यादा रिसर्च प्रोजेक्ट्स को इंडस्ट्रीज से जोड़ा है। इनमें एग्रीकल्चर, ग्रीन एनर्जी, हेल्थकेयर और एडवांस्ड मटेरियल्स जैसे सेक्टर शामिल हैं।